देवी अश्वधाटी स्तोत्रं

चेटी भवन्निखिल खेटी कदंब वन वाटीषु नाकि पटली
कोटीर चारुतर कोटी मणी किरण कोटी करंबित पदा ।
पाटीरगंधि कुचशाटी कवित्व परिपाटी मगाधिप सुता
घोटीखुरा दधिकधाटी मुदार मुखवीटीरसेन तनुताम् ॥ 1

द्वैपायन प्रभृति शापायुध त्रिदिव सोपान धूलि चरणा
पापापह स्वमनु जापानुलीन जन तापापनोद निपुणा ।
नीपालया सुरभि धूपालका दुरितकूपा दुदंचयतु मां
रूपाधिका शिखरि भूपाल वंशमणि दीपायिता भगवती ॥ 2

याऽलीभि रात्म तनुताऽलीनकृत्रिपयक पालीषु खेलति भव
व्याली नकुल्यसित चूलीभरा चरणधूली लसन्मणिगणा ।
याऽली भृति श्रवसि तालीदळं वहति याऽलीक शोभि तिलका
साऽली करोतु मम काली मन स्स्वपद नालीकसेवन विधौ ॥ 3

बालामृतांशु निभ फ़ाला मना गरुण चेला नितंब फ़लके
कोलाहल क्षपित कालामराकुशल कीलाल शोषण रविः ।
स्थूलाकुचे जलद नीलाकचे कलित लीला कदंब विपिने
शूलायुध प्रणतिशीला दधातु हृदि शैलाधिराज तनया ॥ 4

© 2022 Vedam Nadam

कंबावतीव सविडंबा गलेन नव तुंबाभ वीण सविधा
बिंबाधरा विनत शंबायुधादि निकुरुंबा कदंब विपिने ।
अंबा कुरंग मद जंबाल रोचि रिह लंबालका दिशतु मे
शं बाहुलेय शशि बिंबाभिराम मुख संबाधित स्तनभरा ॥ 5

दासायमान सुमहासा कदंबवन वासा कुसुंभ सुमनो
वासा विपंचि कृत रासा विधूतमधु मासारविंद मधुरा ।
कासार सून तति भासाऽभिराम तनु रासार शीत करुणा
नासामणि प्रवर भासा शिवा तिमिर मासादये दुपरतिम् ॥ 6

न्यंकाकरे वपुषि कंकाल रक्त पुषि कंकादि पक्षि विषये
त्वं कामना मयसि किं कारणं हृदय! पंकारि मे हि गिरिजाम् ।
शंकाशिला निशित टंकायमान पद संकाशमान सुमनो
झंकारि भृंगतति मंका नुपेत शशि संकाश वक्त्र कमलाम् ॥ 7

जंभारि कुंभि पृथु कुंभापहासि कुच संभाव्य हार लतिका
रंभा करींद्र कर दंभापहोरुगति डिंभानुरंजित पदा ।
शंभा वुदार परिरंभांकुरत् पुलक दंभानुराग पिशुना
शं भासुराभरण गुंफ़ा सदा दिशतु शुंभासुर प्रहरणा ॥ 8

© 2022 Vedam Nadam

दाक्षायणी दनुज शिक्षा विधौ विकृत दीक्षा मनोहर गुणा
भिक्षाशिनो नटन वीक्षा विनोदमुखि दक्षाध्वर प्रहरणा ।
वीक्षां विधेहि मयि दक्षा स्वकीय जन पक्षा विपक्ष विमुखी
यक्षेश सेवित निराक्षेप शक्ति जय लक्ष्म्यावधान कलना ॥ 9

वंदारु लोक वर संधायिनी विमल कुंदावदात रदना
बृंदारबृंद मणि बृंदारविंद मकरंदाभिषिक्त चरणा ।
मंदानिला कलित मंदारदामभि रमंदाभिराम मकुटा
मंदाकिनी जवन भिंदान वाच मरविंदासना दिशतु मे ॥ 10

यत्राशयो लगति तत्रागजा वसतु कुत्रापि निस्तुल शुका
सुत्राम काल मुख सत्रासकप्रकर सुत्राण कारि चरणा ।
छत्रानिलातिरय पत्त्राभिराम गुण मित्रामरी सम वधू:
कु त्रासहीन मणि चित्राकृति स्फुरित पुत्रादि दान निपुणा ॥ 11

कूलातिगामि भय तूलावळिज्वलन कीला निजस्तुति विधा
कोलाहलक्षपित कालामरी कुशल कीलाल पोषण नभा ।
स्थूलाकुचे जलद नीलाकचे कलित लीला कदंब विपिने
शूलायुधप्रणति शीला विभातु हृदि शैलाधिराज तनया ॥ 12

© 2022 Vedam Nadam

इंधान कीरमणिबंधा भवे हृदयबंधा वतीव रसिका
संधावती भुवन संधारणे प्यमृत सिंधा वुदार निलया ।
गंधानुभाव मुहरंधालि वीत कचबंधा समर्पयतु मे
शं धामभानु मपि रुंधान माशु पद संधान मप्यनुगता ॥ 13

॥ इति श्री कालिदास विरचित देवी अश्वधाटी स्तोत्रं संपूर्णम् ॥

Vedam Nadam

© 2022 Vedam Nadam